टूटा पहिया कविता पर टिप्पणी

हिंदी के महान प्रयोगनादी कवि डो.धर्मवीर भारती की एक छोटी कविता है- टूटा पहिया। महाभारत युद्ध के एक प्रसंग को लेकर यह कविता रची है। कविता में भारतीजी ने प्रतीकों का प्रयोग किया है।

रथ का टूटा हुआ पहिया कहता है कि मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हुँ, लेकिन मुझे अनुपयोगी मानकर नहीं फेंकना। फिर टूटा पहिया अपना अनुभव बताता है कि क्या आप जानते है, कौरवों से रचित दुरूह चक्रव्यूह में अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ दुस्साहस के साथअभिमन्यु आकर घिर जाता है।

कौरव पक्ष के बडे-बडे महारथी लोग अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी अकेली निरायुध आवाज़ यानी शोषित वर्गों का प्रतीक अभिमन्यु को अपने दिव्यास्त्रों द्वारा कुचल देना चाहते हैं।

चक्रव्यूह में फंस गए अभिमन्यु पर कौरव पक्ष टूट पडने पर रथ का टूटा पहिया रूपी मैं कौरव पक्ष के बडेबडे महारथी लोगों के दिव्यास्त्रों से लोहा ले सकता हुँ। टूटा पहिया फिर भी अपने महत्व की याद दिलाती है कि मैं रथ का टूटा पहिया हुँ, लेकिन मुझे नहीं फेंकना।

अंत की पंक्तियों में कवि टूटे पहिये के द्वारा यह भी बताते हैं कि इतिहासों की सामूहिक गति सहसा झूठी पड जाती है तो उस समय सच्चाई को शायद मानवीय मूल्य रूपी टूटे पहिये का आश्रय लेना पडता है।

कविता के शिल्प पक्ष पर चर्चा करने पर मालूम होता है कि पंक्तियों का विन्यास, अक्षौहिणी, चक्रव्यूह जैसे पौराणिक शब्दों का प्रयोग, आकार, गेयता आदि की दृष्टि से यह कविता बेहतर है।

Prepared by : MOHAMMED ALI K

MES HSS IRIMBILIYAM, 9895361234